स्वतंत्र लेखन के लिए बातचीत ज़रूरी

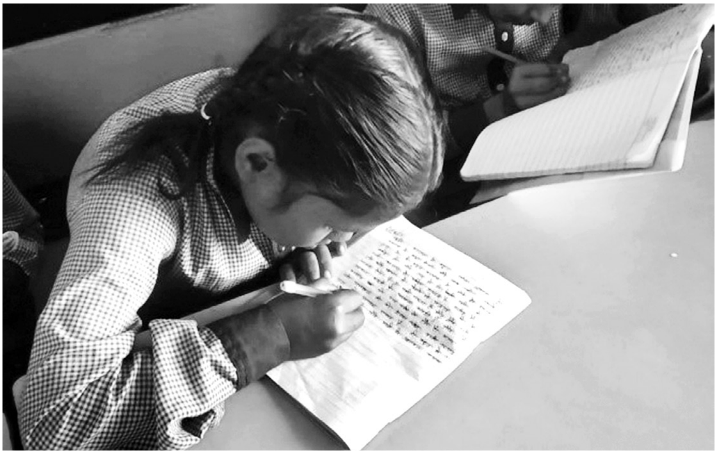
साहबउद्दीन अंसारी

लिखना अभिव्यक्त करने का एक तरीक़ा है। किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए, चाहे वह मौखिक हो या लिखित, विचारों का होना पहली शर्त है। लिखित अभिव्यक्ति के लिए लिपि का ज्ञान होना भी ज़रूरी है। लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है, वैचारिक चिन्तन को सीखना। इसके लिए लोगों से, किताबों से अन्त:क्रिया भी ज़रूरी है, और यह प्रक्रिया धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। इस लेख में लेखक, बच्चों में वैचारिक चिन्तन करने की प्रक्रिया की स्कैफ़ोल्डिंग करते हुए उन्हें स्वतंत्र लेखन की तरफ़ कैसे ले जाते हैं, इसका विवरण प्रस्तुत करते हैं। -सं.

लिखना एक कला है। लिखित रूप से अपने मन की बात को अभिव्यक्त करने से लेखक और पाठक के बीच एक रिश्ता बन जाता है। लेखक क्या कहना चाहता है, पढ़ने वाले को समझ में आ जाता है। किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए विचारों का बनना आवश्यक है। लेकिन लिखते हुए इन विचारों का क्रम भी ज़रूरी होता है। पहले वाक्य एवं दूसरे वाक्य के बीच तारतम्यता होनी चाहिए, यह कार्य अभ्यास से ही हो सकता है। छोटे बच्चों को इस प्रक्रिया में शामिल करना एक चुनौती-भरा काम होता है। हालाँकि, अधिकांश विद्यालयों में बच्चों को लिखने की विभिन्न गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। लेकिन इन गतिविधियों में बोर्ड या पुस्तक से देखकर लिखना, पाठ में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखना, श्रुतलेख, आदि ही शामिल होते हैं।

बच्चों के साथ कार्य करते हुए मैंने यह महसूस किया है कि बच्चे बोर्ड या पुस्तक से देखकर लिखने को ही पढ़ाई-लिखाई मान लेते हैं। अकसर वे कक्षा में कहते हैं कि काम दे दीजिए। जब उनसे किसी कविता / कहानी पर बात की जाती है, वे इस बातचीत को पढ़ने-लिखने का हिस्सा ही नहीं मानते हैं। कक्षा में बच्चे अकसर कॉपी में कुछ-न-कुछ लिखते रहते हैं। इसी को वे कुछ काम करना मानते हैं। इसके पीछे तर्क यह होता है कि अभिभावक भी बच्चों की कॉपी में लिखी गई चीज़ों को ही पढ़ाई-लिखाई मानते हैं। वे सीखने के सिद्धान्त को समझते ही नहीं हैं। इसी तरह, बच्चों से पढ़वाया तो जाता है, पर उन्हें क्या समझ में आया, इसपर बात ही नहीं होती। घर पर भी बच्चे दोहराते ही हैं। इस तरह, बातचीत के अभाव में भाषा के विकास और विचारों के बनने की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया पीछे छूट जाती है। इसका असर बच्चों के लेखन और पठन पर भी देखने को मिलता है। जिन बच्चों के साथ ज़्यादा बातचीत होती है, उनके लेखन में तारतम्यता और शब्दों का चयन अलग होता है और वे आत्मविश्वास से भरे होते हैं। वहीं, जिन बच्चों के साथ कम बातचीत होती है, उनके पास लिखने के लिए शब्दों का चयन करने में असहजता दिखने के साथ-साथ आत्मविश्वास भी कम देखने को मिलता है।

कुछ शिक्षकों का मानना है कि बच्चों की लिखावट ठीक और सुन्दर होनी चाहिए। उनका


चित्र : साहबउद्दीन अंसारी

मानना है कि बच्चा जितना अभ्यास करेगा, उतना ही उसके लेखन में सुधार आएगा। अभ्यास से सुन्दर लिखना तो सम्भव है, लेकिन जब उन्हें स्वतंत्र रूप से कुछ लिखना हो, तब ऐसा अभ्यास उनकी बहुत मदद नहीं करता। इसमें बच्चों को असहजता महसूस होती है। पुस्तक अथवा बोर्ड से देखकर लिखने (नक़ल करने) और स्वतंत्र रूप से लिखने में अन्तर है। अधिकांश बच्चे मात्रा, शब्द एवं वाक्य विन्यास सम्बन्धी ग़लतियाँ करते हैं। क्या लिखा है, उसे पढ़ने में वे अकसर जूझते दिखाई देते हैं। 'असर' की रिपोर्ट भी इस ओर इशारा करती है।

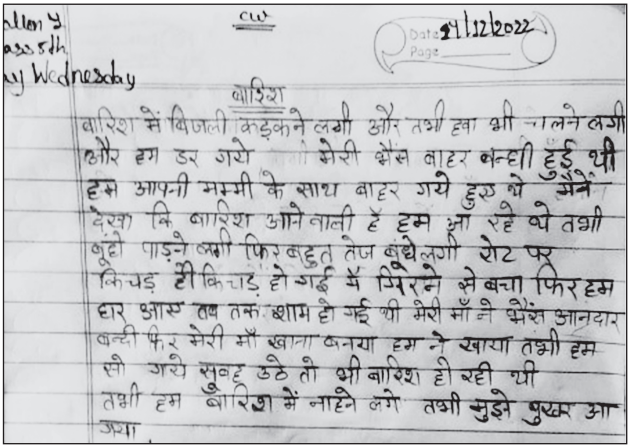
बच्चों के साथ काम के दौरान, मैंने यह समझने का प्रयास किया कि आख़िर उन्हें लिखने में क्या दिक़्क़त आती है; बच्चे लिखित कार्य करते समय चुनौती क्यों महसूस करते हैं; और वे स्वतंत्र लेखन क्यों नहीं कर पाते हैं? इन सवालों को समझने के लिए बच्चों के साथ अलग-अलग विषयों पर बात की गई। इन विषयों में गाय, पत्र, बारिश के अनुभव, झूला, आदि शामिल थे। इस काम में एनसीईआरटी की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों की भी मदद ली गई।

हमने कक्षा पाँच के बच्चों को 'गाय' विषय पर लिखने के लिए कहा। बच्चों ने अपनी कॉपी पर मात्रिक अशुद्धियों के साथ गाय पर कुछ वाक्य लिखे। जैसे– गाय के चार पैर होते हैं; गाय के दो सींग होते हैं; गाय के दो कान होते हैं; गाय के चार थन होते हैं; आदि। इस कार्य के बाद बच्चों को अरुण कमल द्वारा लिखा गया लेख 'सर्दियों की रात में गाय' पढ़कर सुनाया गया, और इसपर उनसे बात की गई। कहानी कैसी लगी; इसमें क्या बात कही गई है; जिनके घर में गाय-भैंस हैं, उन्होंने क्या अवलोकन किया है; सर्दियों में गाय-भैंस के ऊपर बोरे क्यों ओढ़ा देते हैं; आदि सवाल इस चर्चा में उभरे। अब फिर बच्चों को गाय से सम्बन्धित अपने अनुभव सुनाने को कहा गया। इस चर्चा के बाद बच्चों ने बड़ी उत्सुकता के साथ अपने अनुभव बताए। जैसे–

"जब मम्मी गाय का दूध दुहती हैं, तब कई बार गाय लात मार देती है। कभी-कभी दूध गिर भी जाता है। बरसात के दिनों में जब मम्मी दूध निकालने जाती हैं, वे कीचड़ में सन जाती हैं। गाय की बछिया बहुत प्यारी होती है। उसके बाल बहुत मुलायम होते हैं। कभी-कभी वह हमारा हाथ चाटने लगती है। हमें वह बहुत अच्छी लगती है। हम बछिया से प्यार करते हैं। जब हम गाय को चराने ले जाते हैं, उसे एक खूँटे से बाँध देते हैं और वह खूँटे के चारों ओर घूम-घूमकर घास खाती है। बारिश के दिनों में भी हमें उसके लिए चारा लेने जाना होता है। चारा नहीं होगा तब वह क्या खाएगी! इसलिए हमारे मम्मी-पापा भीगते हुए भी चारा लेने जाते हैं।" बातचीत में अब पहले और बाद में फ़र्क़ देखने को मिलने लगा। इसमें बच्चों के अनुभव भी शामिल हो गए।

इसी प्रकार, *चकमक* में प्रकाशित लेख 'रोशनी का पत्र पिता के नाम' बच्चों को सुनाकर उसपर बात की गई। इसे *रिमझिम* के

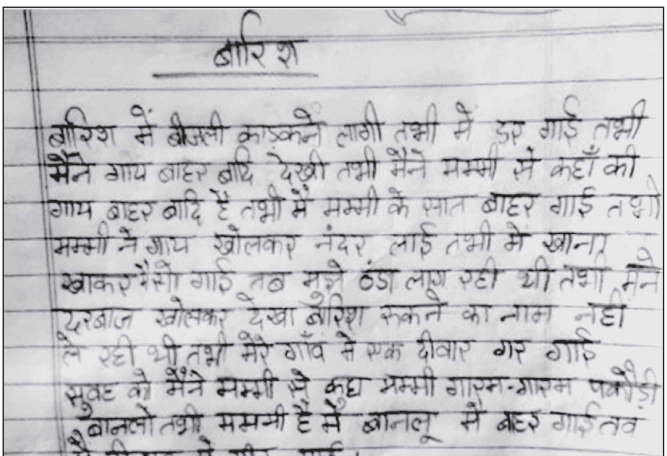
पाठ 'पत्र' से (विद्या सेतु पाठ्यक्रम से) जोड़ते हुए काम किया गया। शुरुआत में बच्चों के साथ पत्र को लेकर चर्चा हुई। जैसे– क्या उनके घर चिट्ठी आती है; कभी चिट्ठी आई है; किस-किस के घर में चिट्ठी आती है; आदि। इसपर बच्चों ने अपनी-अपनी बातें कहीं। हमने उनसे इसके बाद पूछा, अगर आपको अपने दादा, पापा, नानी या ऐसे किन्हीं दूसरे रिश्तेदारों, जो दूर रहते हैं, को चिट्ठी लिखनी हो, आप उन्हें क्या लिखोगे? इसपर हुई बातचीत में बहुत चीज़ें नहीं आईं। बस कुछ ऐसी बातें ही सामने आईं। जैसे– आप कैसे हो; हम ठीक हैं; हमें आपकी याद आती है; आदि। लेकिन जब *चकमक* में प्रकाशित लेख बच्चों को सुनाया गया, उसके बाद वे अपने मन की बात बताने को ज़्यादा आतुर दिखे। यह इसलिए भी हो पाया, क्योंकि जिन बच्चों के साथ यह काम किया गया था, उनके ज़्यादातर रिश्तेदार बाहर रहते हैं। उनके अभिभावक यहाँ रहकर काम करते हैं। बच्चों ने भाषाई त्रुटियों के साथ अपने अनुभव में लिखा कि उनके पापा सुबह जल्दी काम पर चले जाते हैं; वे उनके साथ खेलते नहीं हैं; आदि। एक बच्ची ने अपनी नानी को चिट्ठी लिखी, "आपसे बहुत दिनों से बात नहीं हुई है। इस बार छुट्टियों में आपसे मिलने आऊँगी।" उसने आगे लिखा, "मेरी प्यारी नानी, मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ। मुझे याद है, जब आप घर आई थीं, आपने मुझे गले लगा लिया था। आप मुझे प्यार करती हैं। और जब मैं कोई ग़लती करती थी, आप मुझे डाँटती भी थीं। जब मैं आपसे मिलती हूँ, मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं हमेशा इन्तज़ार करती हूँ कि कब आपके पास जाऊँगी। मुझे वह भी याद है, जब मैं किसी चीज़ की ज़िद करती थी और मम्मी मुझे डाँटती थीं, नहीं दिलाती थीं, तब आप मुझे दिला देती थीं। नानी, मुझे वह दिन भी याद है, जब मैं कंगन की ज़िद कर रही थी और मम्मी मुझे नहीं दिला रही थीं, तब आपने मुझे दिलाए थे। मैं आपसे बहुत दिनों बाद मिली, मुझे बहुत अच्छा लगा। अब मैं इन्तज़ार कर रही हूँ कि कब आपके पास जाऊँगी। अब लगता है कि जल्दी से आपके पास जाऊँ। आपकी बहुत याद आती है मेरी प्यारी नानी...।"


cw
Date 21/12/2022
Wednesday

बारिश

बारिश में बिजली कड़कने लगी और तभी हवा भी चलने लगी
और हम डर गये मेरी भैंस बाहर बन्धी हुई थी
हम आपनी मम्मी के साथ बाहर गये हुए थे मैंने
देखा कि बारिश आने वाली है हम आ रहे थे तभी
बूंदे पाड़ने लगी फिर बहुत तेज बूंदे लगी रोड पर
किचड़ ही किचड़ हो गई मैं गिरने से बचा फिर हम
घर आए तब तक शाम हो गई थी मेरी माँ ने भैंस आनदार
बन्दी फिर मेरी माँ खाना बनया हम ने खाया तभी हम
सो गये सुबह उठे तो भी बारिश हो रही थी
तभी हम बारिश में नाहने लगे तभी मुझे बुखार आ
गया

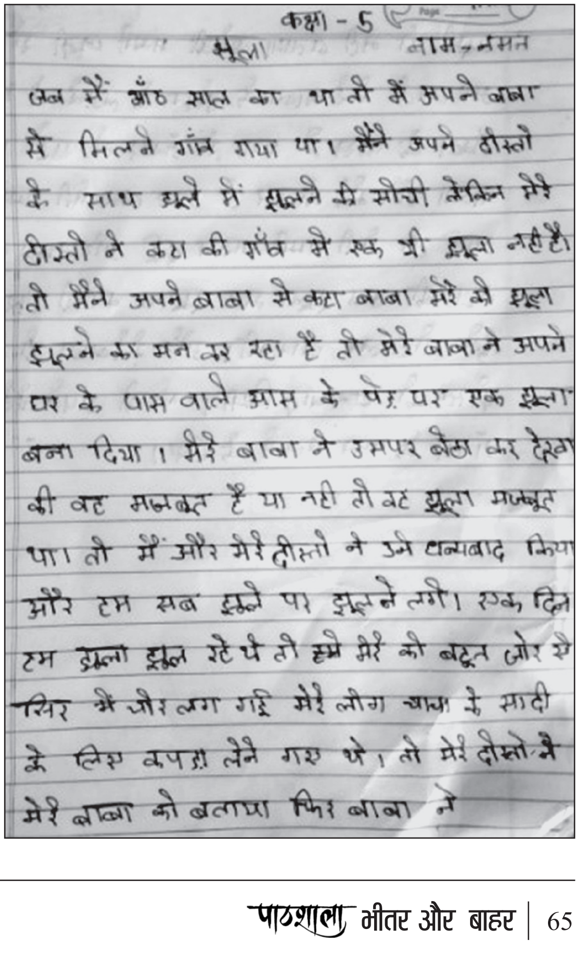
इसी तरह तीसरा विषय 'बारिश' था। बारिश के अनुभवों पर बच्चों के साथ बातचीत चल रही थी। कुछ बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी अपनी बात रख रहे थे और बता रहे थे कि उन्हें बारिश का मौसम अच्छा लगता है। बारिश


बारिश

बारिश से बीजली काड़कने लागी तभी मैं डर गाई तभी
मैंने गाय बाहर बंधि देखी तभी मैंने मम्मी से कहाँ की
गाय बाहर बंदि है तभी मैं मम्मी के सात बाहर गाई तभी
मम्मी ने गाय खोलकर अंदर लाई तभी मैं खाना
खाकर सो गाई तब मुझे ठंडा लाग रही थी तभी मैंने
दरबाज खोलकर देखा बारिश रुकने का नाम नहीं
ले रही थी तभी मेरे गाँव से एक दीवार गर गाई
सुबह को मैंने मम्मी से कहा मम्मी गारम-गारम पकौड़ी
बानलो तभी मम्मी है मैं बानलू मैं बाहर गाई तब
मैं कीचाड़ मे गीर गाई।

में घूमने, नहाने में उन्हें अच्छा लगता है। मम्मी-पापा ज़्यादा नहाने नहीं देते हैं, क्योंकि इससे बुख़ार हो जाता है। वहीं कक्षा में कुछ बच्चे शान्त बैठे थे। जब बारिश पर उनके अनुभव जानने की कोशिश की गई, उन्होंने बताया कि उन्हें बारिश अच्छी नहीं लगती है। हालाँकि, उन्होंने इसका कारण नहीं बताया। बच्चे क्यों अपनी बात नहीं बता रहे होंगे, इसे समझने की कोशिश की गई। थोड़े प्रोत्साहन के बाद बारिश के अनुभव रखते हुए उन्होंने कुछ बातें कहीं। जैसे– बारिश के मौसम में घेशा (केंचुआ) निकल आता है; कीचड़ हो जाता है; फिसलकर गिर जाते हैं; आदि। बच्चों को अपनी बात रखने के लिए और प्रोत्साहित करने पर उन्होंने कुछ और बातें बताईं। जैसे– बारिश के दिनों में उन्हें मज़ा आता है; भीगने का मन होता है; बारिश में घर के अन्दर पानी भी आ जाता है; आदि। इस बातचीत के बाद बच्चों से कहा गया कि बारिश से सम्बन्धित अपने अनुभवों को लिखें। अपने अनुभव लिखते हुए बच्चों ने अपने साथ घटी घटनाओं को लिखा। जो बच्चे कक्षा में चर्चा के दौरान अपनी बात नहीं कह रहे थे, उन्होंने भी अपने अनुभव लिखे। कुछ बच्चों ने लिखा कि बारिश में अच्छा नहीं लगता है, घर के अन्दर पानी आ जाता है, छत से पानी टपकता है, बारिश से धान गिर जाता है और फ़सल भी ख़राब हो जाती है। उन्होंने लिखा कि एक बार इतनी बारिश हुई कि गाँव में दीवार गिर गई। एक बच्चे ने तो विश्लेषण की क्षमता का इस्तेमाल करते हुए यह भी लिखा कि बारिश का होना सबके लिए अलग होता है, कोई ख़ुश होता है, तो कोई इससे खुश नहीं होता है।

बरखा सीरिज़ की पुस्तक *झूला* पर कार्य करने के सिलसिले में भी लिखने से पहले बच्चों के साथ बातचीत की गई। झूले से सम्बन्धित बच्चों के अनुभव सुने गए। उनसे पूछा गया कि वे किस-किस तरह के झूले में झूले हैं और उन्होंने कहाँ-कहाँ झूला देखा है। बच्चों ने बताया कि उन्होंने मिक्की माउस, बड़े वाले झूले, चकरी, आदि में झूला है। उन्होंने यह भी बताया कि इस तरह के झूले उन्होंने मेले में देखे हैं। कुछ बच्चों ने बताया कि उन्होंने पेड़ की डाली पर रस्सी डालकर और पेड़ की डाल पर लटक कर भी झूला है। बच्चों के साथ बातचीत को आगे बढ़ाते हुए उनसे कुछ और सवाल पूछे गए। जैसे– क्या बड़ों के पैरों पर भी झूले हो; क्या किसी बच्चे को झूला झुलाया है; किस झूले में ज़्यादा मज़ा आया; आदि। इसपर बच्चों ने अपने अनुभव रखते हुए बताया कि दादा, मम्मी, पापा के पैरों में झूलने में ज़्यादा मज़ा आता है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि चारपाई में चुन्नी से बाँधकर छोटे बच्चों को झूला झुलाते हैं। इस बातचीत के बाद उन्हें फिर से 'झूला' पर लिखने के लिए कहा गया। इस



कक्षा - 5

झूला   नाम - नमन

जब मैं आँठ साल का था तो मैं अपने बाबा
से मिलने गाँव गया था। मैंने अपने दोस्तो
के साथ झूले में झूलने की सोची लेकिन मेरे
दोस्तो ने कहा की गाँव में एक भी झूला नहीं है।
तो मैंने अपने बाबा से कहा बाबा मेरे भी झूला
झूलने का मन कर रहा है तो मेरे बाबा ने अपने
घर के पास वाले आम के पेड़ पर एक झूला
बना दिया। मेरे बाबा ने उसपर बैठा कर देखा
की वह मजबूत है या नही तो वह झूला मजबूत
था। तो मैं और मेरे दोस्तो ने उन्हे धन्यवाद किया
और हम सब झूले पर झूलने लगे। एक दिन
हम झूला झूल रहे थे तो हमें मेरे को बहुत जोर से
सिर में चोट लग गई मेरे लोग चाचा के सादी
के लिए कपड़ा लेने गए थे। तो मेरे दोस्तो ने
मेरे बाबा को बताया फिर बाबा ने



चित्र : मीनाक्षी आर्या

बातचीत का असर बच्चों के लेखन पर दिखा। अब वे समझ के साथ अपने अनुभव लिखने की ओर बढ़ रहे थे।

कक्षा में 'सुनीता की पहिया कुर्सी' कहानी पर काम चल रहा था। बच्चों से कहानी के सम्बन्ध में बातचीत की गई। जैसे– उन्हें कहानी कैसी लगी; क्या अच्छा लगा; सुनीता क्यों ख़ुश थी; आदि। इस चर्चा के बाद उन्हें सुनीता की जगह पर विनीता, दुकानदार, चीनी, पहिया कुर्सी, आदि शब्द देकर अपनी ख़ुद की कहानी बनाने को कहा गया। बच्चों ने इस कहानी को पढ़ा भी था और कक्षा में इसपर काम भी हुआ था, इसलिए उन्होंने इन शब्दों का उपयोग कर वैसी ही कहानी बनाने का प्रयास किया, जैसी पुस्तक में दी गई थी।

इस बातचीत से यह समझ में आया कि बच्चों के पास अनुभव हैं, पर वे उन अनुभवों को कैसे अभिव्यक्त करें, इसकी समझ उनमें नहीं है। बातचीत से पहले जब बच्चों से लिखने को कहा गया, वे पूछते रहे कि क्या लिखना है। इनमें से कुछ बच्चे कुछ ही वाक्य बना पाए। लेकिन बातचीत के बाद चीज़ें बदल गईं। इसलिए लेखन से पूर्व बच्चों के साथ बातचीत का अपना महत्त्व है। चित्रों, पाठों और बच्चों के अनुभवों पर बातचीत करने से उन्हें अपने विचारों को व्यवस्थित करने में मदद मिलती है। मेरा मानना है कि बाल साहित्य को कक्षा प्रक्रिया का नियमित हिस्सा बनाकर भी इस काम को किया जा सकता है। प्रत्येक विद्यालय में बाल साहित्य उपलब्ध होता है। इसे बच्चों को पढ़ने के लिए ज़रूर दिया जाना चाहिए। पढ़ने के पश्चात, उनसे पढ़ी गई सामग्री पर बातचीत करना भी ज़रूरी है। इसके साथ ही उन्हें अपने अनुभव लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के मौक़े भी दिए जाने चाहिए।

बच्चे लिखित अभिव्यक्ति करें, इसके लिए उन्हें मौक़े देने के साथ-साथ लिखने के कुछ नमूनों से भी परिचित कराना होता है। इससे बच्चों को समझ में आता है कि लिखना क्या है और कैसे लिखा जाए। इस प्रक्रिया से ही वे यह भी सीखते हैं कि पहले और दूसरे वाक्य को कैसे जोड़ना है, तारतम्यता कैसे बनानी है, आदि। बच्चों को रचनात्मक लेखन के काम में जोड़ने के लिए उनके साथ बातचीत ज़रूरी है। हमें समझना होगा कि हर बच्चा बेहतर करने का प्रयास करता है। आवश्यकता है, बस उन्हें मौक़े देने की।

साहबउद्दीन अंसारी कुमाऊँ विश्वविद्यालय से शिक्षाशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 17 वर्षों से कार्यरत हैं, जिसमें अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, ऊधम सिंह नगर में 6 वर्ष शिक्षक के रूप में कार्य किया है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्य कर रहे हैं। बच्चों के साथ कार्य करना अच्छा लगता है। आपके कई लेख विभिन्न पत्रिकाओं व पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं।

सम्पर्क : sahabuddin.ansari@azimpremjifoundation.org